चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम अमर उजाला
दिनांक 3:4:2019 पृष्ठ सं. 3 कॉलम 3-8

कृषि

मंडूसी से गेहूं की पैदावार में 80 प्रतिशत तक की उपज के नुकसान की रहती है आशंका

उचित प्रबंधन से की जा सकती है मंडूसी की रोकथाम : डॉ. समुंदर

अमर उजाला ब्यूरो

माजरा गांव में किसानों को खरपतवारों के प्रबंधन के बारे में जानकारी देते कृषि वैज्ञानिक। - अमर उजाला

हिसार। लगभग 25 वर्ष बाद दोबारा मंडूसी खरपतवार ने किसानों के खेतों में विकराल रूप धारण कर लिया है, जो सभी सिफारिशसुदा खरपतवार नाशकों के प्रतिरोधक क्षमता हासिल कर चुकी है।

गेहूं-धान फसल चक्र वाले खेतों में इसका भारी प्रकोप है, जिससे गेहूं की पैदावार में 80 प्रतिशत तक उपज का नुकसान हो सकता है। यह बात चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सस्य विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. समुंदर सिंह ने कही।

डॉ. समुंदर सिंह तथा वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिक डॉ. सतबीर सिंह पूनिया के मार्गदर्शन में इस विश्वविद्यालय में अध्ययनरत देश-विदेश के 25 छात्र-छात्राओं और कृषि वैज्ञानिकों की टीम ने कैथल, करनाल व कुरुक्षेत्र का दौरा किया। इस टीम ने पहले दिन कैथल के गांव फरल, मुन्नारेहड़ी और भाना में किसानों के साथ विचार गोष्ठी का आयोजन कर उनकी समस्याओं के बारे में जाना। साथ ही उनको विभाग द्वारा किसानों के खेतों में प्रदर्शन तथा पेस्टिसाइड इंडिया व बायर क्रॉप साइंस के सहयोग से चल रहे मंडूसी प्रबंधन के तजुर्बों से रूबरू करवाया।

इस कार्यक्रम के दौरान छात्र-छात्राओं को खरपतवार की पहचान तथा किसानों को खरपतवार नियंत्रण में आ रही मुख्य समस्याओं के प्रति मंडूसी की प्रतिरोधक क्षमता के साथ उनके उचित प्रबंधन से अवगत करवाया गया। इस अवसर पर डॉ. समुंदर सिंह और डॉ. सतबीर सिंह पूनिया ने गेहूं में मंडूसी के उचित प्रबंधन के लिए एकीकृत कृषि कार्यों, प्रभावी खरपतवार नाशकों और उनके उचित इस्तेमाल के बारे में जानकारी दी।

कम हो चुका है खरपतवार नाशकों का असर : डॉ. सिंह

डॉ. समुंदर सिंह ने बताया कि मंडूसी के अलावा जंगली जई, जंगली पालक, बाथू व लुंबर घास में भी कई खरपतवार नाशकों का असर कम हो चुका है। इनका सही चुनाव, उचित मात्रा, नोजल व प्रयोग का तरीका महत्वपूर्ण है। गंभीर समस्या को देखते हुए एक से अधिक खरपतवार नाशकों के मिश्रण का बिजाई के समय व 30-35 दिन की अवस्था में दो बार छिड़काव करने की जरूरत है। दूसरे दिन टीम ने करनाल के गांव माजरा में मंडूसी प्रबंधन के तजुर्बों का दौरा किया।

दो दिन में 172 किसानों को दिखाए प्रयोग

दो दिन के इस खेत दिवस के दौरान कुल 172 किसानों को प्रयोग दिखाए गए व उन्हें भविष्य में उचित खरपतवार नियंत्रण के उपायों से अवगत कराया गया। विदेशी छात्र-छात्राओं ने खरपतवार नियंत्रण के साथ हरियाणवी संस्कृति और ग्रामीण गतिविधियों में खूब दिलचस्पी दिखाई। कार्यक्रम में डॉ. टोडरमल पूनिया, डॉ. नवीश कंबोज, डॉ. सुरेंद्र शर्मा, डॉ. सुशील कुमार, डॉ. रामधन, डॉ. नवीन कंबोज व डॉ. आशीष भी मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम दैनिक भास्कर

दिनांक 3-4-2019 पृष्ठ सं. 5 कॉलम 3-5

स्टूडेंट्स के साथ एचएयू की टीम ने मंडूसी की समस्या पर ग्रामीणों को बताए समाधान

गेहूं-धान फसल चक्र वाले खेतों में पैदावार पर 80 प्रतिशत तक प्रभाव डाल रहा मंडूसी खरपतवार

भास्कर न्यूज | हिसार

लगभग 25 वर्ष बाद दोबारा मन्डूसी खरपतवार ने किसानों के खेतों में विकराल रूप धारण कर लिया है जोकि सभी सिफारिशशुदा खरपतवारनाशकों के प्रति रोधकता हासिल कर चुकी है। गेहूं-धान फसल चक्र वाले खेतों में इसका भारी प्रकोप है जिससे गेहूं की पैदावार में 80 प्रतिशत तक उपज का नुकसान हो सकता है। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सस्यं विज्ञान विभाग द्वारा खरपतवार नियंत्रण के लिए दो दिवसीय खेत दिवस का आयोजन किया गया। विभागाध्यक्ष डॉ. समुंदर सिंह तथा वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिक डॉ. सतबीर सिंह पूनिया के मार्गदर्शन में एचएयू में अध्ययनरत देश-विदेश के 25 छात्र-छात्राओं और कृषि वैज्ञानिकों की टीम ने कैथल, करनाल व कुरूक्षेत्र का दौरा किया। इस टीम ने पहले दिन कैथल के गांव फरल, मुन्नारेहड्डी तथा भाना में किसानों के साथ विचार गोष्ठी का आयोजन कर उनकी समस्याओं के बारे में जाना तथा उनको विभाग द्वारा किसानों के खेतों में प्रदर्शन तथा पेस्टिसाइड इंडिया व बायर क्रॉप साइंस के सहयोग से चल रहे मन्डूसी प्रबंधन के तजुर्बों से रूबरू करवाया। इस कार्यक्रम दौरान छात्र-छात्राओं को खरपतवारों की पहचान तथा किसानों को खरपतवार नियंत्रण में आ रही मुख्य समस्याओं जैसे की खरपतवार नाशकों के प्रति मन्डूसी की प्रतिरोधकता के साथ-साथ उनके उचित प्रबंधन से अवगत करवाया गया।

मंडूसी का ऐसे कर सकते हैं उपाय

डॉ. समुंदर सिंह ने बताया कि मंडूसी के अलावा जंगली जई, जंगली पालक, बाथु व लुम्बर घास में भी कई खरपतवारनाशकों का असर कम हो चुका है जिसका गेहूं की पैदावार पर दुष्प्रभाव स्पष्ट दिखाई दे रहा है। बार-बार एक ही खरपतवारनाशक के प्रयोग से इनके प्रति रोधकता आ चुकी है जिससे किसान को अधिक मात्रा में खरपतवारनाशकों का प्रयोग करना पड़ता है। गंभीर समस्या को देखते हुए एक से अधिक खरपतवारनाशकों के मिश्रण का बिजाई के समय व 30-35 दिन की अवस्था में दो बार छिड़काव करने की जरूरत है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम ......नभ. छोर.......
दिनांक 2.4.2019 पृष्ठ सं. ....6.... कॉलम ....2-8....

गेहूं-धान फसल वाले खेतों में खरपतवार का प्रकोप

हिसार/02 अप्रैल/रिपोर्टर

लगभग 25 वर्ष उपरांत दोबारा मन्डूसी खरपतवार ने किसानों के खेतों में विकराल रूप धारण कर लिया है जो सभी सिफारिशशुदा खरपतवार नाशकों के प्रति रोधकता हासिल कर चुकी है। गेहूं-धान फसल चक्र वाले खेतों में इसका भारी प्रकोप है जिससे गेहूं की पैदावार में 80 प्रतिशत तक उपज का नुकसान हो सकता है। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सस्य विज्ञान विभाग द्वारा खरपतवार नियंत्रण के लिए दो दिवसीय खेत दिवस का आयोजन किया गया। सस्य विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. समुंदर सिंह तथा वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिक डॉ. सतबीर सिंह पूनिया के मार्गदर्शन में इस विश्वविद्यालय में अध्ययनरत देश-विदेश के 25 छात्र-छात्राओं और कृषि वैज्ञानिकों की टीम ने कैथल, करनाल व कुरूक्षेत्र का दौरा किया। इस टीम ने पहले दिन कैथल के गांव फरल, मुन्नारेहड्डी तथा भाना में किसानों के साथ विचार गोष्ठी का आयोजन कर उनकी समस्याओं के बारे में जाना तथा उनको विभाग द्वारा किसानों के खेतों में प्रदर्शन तथा पेस्टिसाइड इंडिया व बायर क्रॉप साइंस के सहयोग से चल रहे मन्डूसी प्रबंधन के तजुर्बों से रूबरू करवाया। इस कार्यक्रम दौरान छात्र-छात्राओं को खरपतवारों की पहचान तथा किसानों को खरपतवार नियंत्रण में आ रही मुख्य समस्याओं जैसे की खरपतवार नाशकों के प्रति मन्डूसी की प्रतिरोधकता के साथ-साथ उनके उचित प्रबंधन से अवगत करवाया गया। इस अवसर पर डॉ. समुंदर सिंह तथा डॉ. सतबीर सिंह पूनिया ने गेहूं में मंडूसी के उचित प्रबंधन के लिए एकीकृत कृषि कार्यों, प्रभावी खरपतवारनाशकों तथा उनके उचित इस्तेमाल के बारे में जानकारी दी। डॉ. समुंदर सिंह ने बताया कि मंडूसी के अलावा जंगली जई, जंगली पालक, बाथु व लुम्बर घास में भी कई खरपतवारनाशकों का असर कम हो चुका है जिसका गेहूं की पैदावार पर दुष्प्रभाव स्पष्ट दिखाई दे रहा है। बार-बार एक ही खरपतवारनाशक के प्रयोग से इन खरपतवारनाशकों के प्रति रोधकता आ चुकी है जिससे किसान को अधिक मात्रा में खरपतवारनाशकों का प्रयोग करना पड़ता है। इनका सही चुनाव, उचित मात्रा, नोज्जल व प्रयोग का तरीका महत्वपूर्ण है। गंभीर समस्या को देखते हुये एक से अधिक खरपतवारनाशकों के मिश्रण का बिजाई के समय व 30-35 दिन की अवस्था में दो बार छिड़काव करने की जरूरत है। इसके साथ उन्होंने किसानों को गेहूं में बिजाई के तुरन्त बाद खरपतवारनाशकों के प्रयोग व पहली सिंचाई समय पर करने के महत्व को बताया। गेहूं में मंडूसी की भारी समस्या के समाधान तथा किसानों को इससे हो रहे नुक्सान से बचाने के लिए कृषि वैज्ञानिकों ने कृषि विश्वविद्यालय, कृषि विभाग, सरकार तथा निजी कंपनियों व किसानों की सहभागिता पर बल दिया। दूसरे दिन टीम ने करनाल के गांव माजरा में मंडूसी प्रबंधन के तजुर्बों का दौरा किया तथा वहां उपस्थित किसानों को इसके उचित प्रबंधन के लिए प्रभावी खरपतवारनाशकों तथा उनके उचित इस्तेमाल तथा उपयोग के समय बरती जाने वाली सावधानियों के बारे में जानकारी दी। तत्पश्चात कृषि वैज्ञानिकों ने किसानों को विभिन्न फसलों में खरपतवार नियंत्रण में आने वाली समस्याओं के बारे में जाना तथा उनके उचित समाधान के लिए सुझाव दिये। दो दिन के इस खेत दिवस के दौरान कुल 172 किसानों को प्रयोग दिखाये गये व उन्हे भविष्य में उचित खरपतवार नियंत्रण के उपायों से अवगत कराया गया। विदेशी छात्र-छात्राओं ने खरपतवार नियंत्रण के साथ-साथ हरियाणवी संस्कृति तथा ग्रामीण गतिविधियों में खूब दिलचस्पी दिखाई। इस कार्यक्रम में डॉ. टोडरमल पुनिया, डॉ. नवीश कंबोज, डॉ. सुरेन्द्र शर्मा, डॉ. सुशील कुमार, डॉ. रामधन, डॉ. नवीन कंबोज व डॉ. आशीष भी मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम ....सिटी पल्स....
दिनांक 8.4.2019 पृष्ठ सं. ...3... कॉलम ...1-5...

कार्यक्रम | हकृवि द्वारा खरपतवार नियंत्रण के लिए दो दिवसीय खेत दिवस का आयोजन

उचित प्रबंधन से की जा सकती है मंडूसी की रोकथाम

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। लगभग 25 वर्ष उपरांत दोबारा मन्डूसी खरपतवार ने किसानों के खेतों में विकराल रूप धारण कर लिया है जो सभी सिफारिशशुदा खरपतवार नाशकों के प्रति रोधकता हासिल कर चुकी है। गेहूं-धान फसल चक्र वाले खेतों में इसका भारी प्रकोप है जिससे गेहूं की पैदावार में 80 प्रतिशत तक उपज का नुकसान हो सकता है।

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सस्य विज्ञान विभाग द्वारा खरपतवार नियंत्रण के लिए दो दिवसीय खेत दिवस का आयोजन किया गया। सस्य विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. समुंदर सिंह तथा वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिक डॉ. सतबीर सिंह पूनिया के मार्गदर्शन में इस विश्वविद्यालय में अध्ययनरत देश-विदेश के 25 छात्र-छात्राओं और कृषि वैज्ञानिकों की टीम ने कैथल, करनाल व कुरूक्षेत्र का दौरा किया। इस टीम ने पहले दिन कैथल के गांव फरल, मुआरेहड़ी तथा भाना में किसानों के साथ विचार गोष्ठी का आयोजन कर उनकी समस्याओं के बारे में जाना। इस कार्यक्रम दौरान छात्र-छात्राओं को खरपतवारों की पहचान तथा किसानों को खरपतवार नियंत्रण में आ रही मुख्य समस्याओं जैसे की खरपतवार नाशकों के प्रति मन्डूसी की प्रतिरोधकता के साथ-साथ उनके उचित प्रबंधन से अवगत करवाया गया। इस अवसर पर डॉ. समुंदर सिंह तथा डॉ. सतबीर सिंह पूनिया ने गेहूं में मंडूसी के उचित प्रबंधन के लिए एकीकृत कृषि कार्यों, प्रभावी खरपतवारनाशकों तथा उनके उचित इस्तेमाल के बारे में जानकारी दी। डॉ. समुंदर सिंह ने बताया कि मंडूसी के, अलावा जंगली जई, जंगली पालक, बाथु व लु सर घास में भी कई खरपतवारनाशकों का असर कम हो चुका है जिसका गेहूं की पैदावार पर दुष्प्रभाव स्पष्ट दिखाई दे रहा है। दो दिन के इस खेत दिवस के दौरान कुल 172 किसानों को प्रयोग दिखाये गये व उन्हे भविष्य में उचित खरपतवार नियंत्रण के उपायों से अवगत कराया गया।

विदेशी छात्र-छात्राओं ने खरपतवार नियंत्रण के साथ-साथ हरियाणवी संस्कृति तथा ग्रामीण गतिविधियों में खूब दिलचस्पी दिखाई। इस कार्यक्रम में डॉ. टोडरमल पूनिया, डॉ. नवीश कंबोज, डॉ. सुरेन्द्र शर्मा, डॉ. सुशील कुमार, डॉ. रामधन, डॉ. नवीन कंबोज व डॉ. आशीष भी मौजूद थे।

हिसार। कृषि वैज्ञानिक गेहूं उत्पादक किसानों को मंडूसी प्रबंधन बारे जानकारी देते हुए।